ISSN No. 2349-4654
नाद–नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 4, अंक : 1, जनवरी 2017

संगीत जगत में इंटरनेट शिक्षा का प्रभाव

शशांक भट्टाचार्य

शोधार्थी, हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक, संगीत भवन, विश्वभारती यूनिवर्सिटी, शांतिनिकेतन

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' धातु से बना है। जिसका अर्थ है 'सिखाना'। शिक्षा शब्द का अंग्रेजी समानार्थक शब्द 'Education' (एजुकेशन) जो की लेटिन भाषा के Educatum (एजुकेटम) शब्द से बना है तथा Educatum (एजुकेटम) शब्द स्वयं लैटिन भाषा के E (ए) Duco(ड्यूक) शब्दों से मिलकर बना है। E (ए) शब्द का अर्थ है अंदर से और Duco (ड्यूको) शब्द का अर्थ है आगे बढ़ना। अत: Education का शब्दिक अर्थ 'अंदर से आगे बढ़ना है'।

लेकिन लैटिन भाषा के Educare (एजुकेयर) तथा Educere (एजुशियर) शब्दों को भी Education (एजुकेशन) शब्द के मूल के रूप में स्वीकार किया जाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यक्ति या बालक की आन्तरिक शक्तियों को बाहर लाने अथवा विकसित करने की क्रिया से लिया जाता है। शिक्षा की परिभाषाएँ :-

1. फ्रॉबेल के अनुसार, ''शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक बालक अपनी शक्तियों का विकास करता है।''
2. स्वामी विवेकानंद के अनुसार, ''मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''
3. महात्मा गांधी के अनुसार, ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क या आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।''
4. अरस्तु के अनुसार, ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।''
5. पेस्टॉलॉजी के अनुसार, ''मानव की आंतरिक शक्तियों का स्वभाविक व सामंजस्यपूर्ण प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है।''
6. हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार, ''शिक्षा से तात्पर्य है अन्तर्निहित शक्तियों तथा बाह्य जगत के मध्य समन्वय स्थापित करना है।''[1]

इंटरनेट

दस्तावेजों एवं सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए TCP/IP प्रोटोकॉल का उपयोग करके दो कम्प्यूटर के बीच में स्थापित किये गए सम्बंध को ही इंटरनेट कहते है।

दूसरे शब्दों में कहे तो...

राऊटर और सर्वर के माध्यम से दुनिया में कहीं भी किसी भी एक कम्प्यूटर के लिए अन्य कम्प्यूटर को जोड़ने का साधन है, अगर दो कम्प्यूटर इंटरनेट पर लॉग इन कर रहे हैं तो वे सभी तरह के सन्देश ग्राफिक्स,आवाज, और कम्प्यूटर प्रोग्राम के रूप में सभी प्रकार की जानकारी भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं।

1969 इंटरनेट अमेरिकी रक्षा विभाग के द्वारा UCLA तथा स्टैनफोर्ड अनुसंधान संस्थान कंप्यूटर्स का नेटवर्किंग करके इंटरनेट की संरचना की गई। भारत में इंटरनेट 80 के दशक में आया, जब एर्नेट (Educational & Research Network) को सरकार, इलेक्ट्रानिक्स विभाग और संयुक्त राष्ट्र उन्नति कार्यक्रम (UNDP) की ओर से प्रोत्साहन मिला। सामान्य उपयोग के लिए जाल 15 अगस्त 1995 से उपलब्ध हुआ, जब विदेश संचार निगम लिमिटेड (VSNL) ने गेटवे सर्विस शुरू की।[2]

इंटरनेट कनेक्शन के प्रकार

DIAL -UP कनेक्शन इस कनेक्शन में मॉडेम डिवाइस के माध्यम से इंटरनेट से कनेक्ट किया जाता है।

डेडिकेटेड केबल कनेक्शन (24 × 7)

केबल—ब्रॉडबैंड इंटरनेट कनेक्शन।[3]

वर्तमान युग को 'सूचना युग' भी कहा जाता है, क्योंकि सूचना आज हमारी जीवन शैली की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। मानव मस्तिष्क के लिए आज सूचना का वही महत्त्व है, जो मानव शरीर के लिए आक्सीजन का है। संचार प्रौद्योगिकी में तीव्र गति से हुए विकास ने सूचना क्रान्ति को जन्म देकर उसके महत्त्व को उजागर कर दिया है। सम्पूर्ण विश्व में सूचना तकनीक का अन्तरिक्ष विज्ञान से लेकर सामान्य जनजीवन तक में सफलापूर्वक प्रयोग हो रहा है। इस कारण जीवन के अन्य क्षेत्रों की भाँति शिक्षा के दृष्टि से अपरिमित सम्भावनाओं के द्वार खुल गये हैं।

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसका स्वरूप बदलती सामाजिक परिस्थिति और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप बदलता रहता है। विज्ञान के युग में अनेक तकनीकी माध्यमों से शिक्षा के आदान प्रदान के प्रयास निरन्तर किये जा रहे है, जिनमें व्यक्तिगत अध्ययन,

संस्थागत शिक्षण, पत्राचार व सूचना के स्त्रोतों का प्रत्यक्ष उपयोग करने वाली स्वशिक्षा के अनेक रूप हैं। इस प्रणाली से परम्परागत शिक्षा एवं शिक्षण की अनेक समस्याएँ व कमियों का निदान हो रहा है। शिक्षा व शिक्षण सुलभ और ग्राह्य हो गया है। इस प्रणाली के अन्तर्गत श्रव्य एवं दृश्य सामग्री, कम्प्यूटर आधारित शिक्षण, उपग्रह आधारित संचार प्रणाली, शैक्षिक दूरदर्शण आदि हैं। वीडियो, टेप, वीडियो डिस्क, टेली कान्फ्रेसिंग और अन्यान्य वैज्ञानिक साधन व्यापक रूप से शिक्षण में नवीन सम्भावनाओं को जन्म दे रहे हैं।

वर्तमान समय में संगीत जगत में इंटरनेट शिक्षा ने एक महवत्पूर्ण स्थान अभिकार किया हैं। संगीत को गुरुमुखी विद्या कहा गया है, समय के परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा पद्धति में भी परिवर्तन हुआ है। आज संगीत की शिक्षा सामूहिक रूप से दी जाती है। जिनके माध्यम से हजारों लोक संगीत शिक्षा प्राप्त कर रहा है।[4] आज कुछ निजि क्षेत्र की संस्थाएँ इंटरनेट के जरिए संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहा है, जिस कारण विद्यार्थी को संगीत शिक्षा प्राप्त करने में आसानी हो रही हैं, कुछ विद्यार्थी ऐसे हैं जो संगीत शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं,लेकिन माँ-बाप के कहीं स्थनांतरित हो जाना जैसी बाधाएँ इन्हें घेर लेती है। इन विद्यार्थी के लिए इंटरनेट संगीत शिक्षा पद्धति काफी म्हवत्पूर्ण है, क्योंकि वह इंटरनेट के जरिए अलग अलग जगह पर रह कर भी शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

इंटरनेट के जरिए आज शिक्षक वेब-साइट खोलकर दुनिया को अपना परिचय देते हैं। वेब-साइट के जरिए शिक्षकों की जानकारी हासिल कर के विद्यार्थी इनसे संपर्क करते हैं और शिक्षण लेते हैं। ऑडियो और वीडियो रिकाडिंग तथा एडिटिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग करके शिक्षक और गुरु ई-मेल, चैटिंग व्यवस्था के जरिए दृश्य एवं श्रव्य (ऑडियो-विजुवल) पद्धति में अपने विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं। फलस्वरूप विदेशों में रहने वाले विद्यार्थी भी अपनी अभिरुचि के अनुसार शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इंटरनेट के माध्यम से अनेक अध्यापक और शिक्षण संस्थाए दृश्य और श्रव्य रूपों में शिक्षाण देकर गुरु-शिष्य संबंध को मजबूत बना रहे हैं।

संगीत एक संवेदनशील कला है। वातावरण में हुए किसी भी परिवर्तन का शीघ्र प्रभाव इस पर पड़ता है। आज इंटरनेट का युग है और इसका व्यापक प्रभाव संगीत जगत में पड़ा है। संगीत के क्षेत्र में तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप, प्रचार-प्रसार के साधन कम्प्यूटर इंटरनेट मोबाइल फ़ोन आदि आविर्भाव से संगीतशात्र एवं क्रियात्मक दोनों को समृद्ध बनाने में सहयोग मिला है। वरिष्ठ कलाकारों की कला को इंटरनेट के माध्यम से संरक्षित किया जा सकता है। इंटरनेट के आविर्भाव से आज कलाकार की आवाज को हजारों लोग एक साथ सुन सकते है।[5]

इंटरनेट ने शिक्षा व शोध कार्यों को अधिक व्यवहारिक व सरल बना दिया है। साथ ही विश्व स्तर पर हो रही नित-नवीन घटनाओं, खोजों, अनुसन्धानों व नवीन तकनीकी की जानकारी भी सहजता से प्राप्त हो जाती है। इस के कारण शोध सम्बन्धों कार्यों में भी शोधार्थियों के अनेक लाभ हुए हैं। इस प्रकार अन्य विषयों की भाँति संगीत में भी हो रहे शोधों की गुणवता, वैधानिकता व वैज्ञानिकता को बल मिला है।

सूचना क्रांति के इस युग में दृश्य संगीत एवं श्रव्य संगीत दोनों प्रकार का आनन्द एक साथ ले पाते हैं। इंटरनेट के जरिए आज हम प्रसिद्ध कलाकारों ने प्रदर्शण किए गए कला को देख और सुन सकते हैं। यहाँ कला हम दो प्रकार से देख सकते है, एक (online) ऑनलाइन और दूसरा (offline) ऑफलाइन। ऑफलाइन में हम पहले इंटरनेट के जरिए विडीओ डाउनलोड करके बाद में बिना इंटरनेट संपर्क किए उस विडीओ को देख सकता है। ऑनलाइन में हम बिना इंटरनेट संपर्क किए नहीं देख सकते हैं। ऑनलाइन के जरिए हम कलाकार की कला प्रदर्शन सीधा प्रसारण देख सकते हैं और बाद में भी अगर वो विडिओ इंटरनेट में है तो उस को हम फिर से देख सकते हैं। इस तरह हम ऑनलाइन से भी संगीत शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। मान लीजिए की एक शिक्षक भारत में है और उस का शिष्य किसी दूसरे देश में तो वह दोनों एक ही समय में इंटरनेट से संपर्क करके कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि के जरिए शिक्षक शिष्य को सीधे-सीधे शिक्षा प्रदान कर सकते हैं और शिष्य भी सीधे सामने से शिक्षा ग्रहण कर सकते है।[6]

इंटरनेट के जरिए कई सारे संगीत सम्बंधित सॉफ्टवेयर को कम्प्यूटर में डाउनलोड करके उसे इन्स्टालेशन करके उसका लाभ उठा सकते हैं। तानपुरा, तबला, लहरा आदि के सॉफ्टवेयर डाउनलोड कर सकते है और उस से सुर और ताल की साधना के लिए सहायता ले सकते हैं। कुछ तानपुरा, तबला, लहरा आदि के सॉफ्टवेयर डाउनलोड करने का वेबसाइट है—tampura.bzhtec.com, your-tanpura.software. informer.com, https://riyazstudio.apple.com, आदि कुछ प्रसिद्ध संगीतज्ञ के संगीत को डाउनलोड करने की वेबसाइट है—

https://ituness.apple.com,www.tafelmusik.org
www.chambermusicsociety.org/watchlive
https://www.youtube. com

आज वैज्ञानिक उपकरणों का काफी विकास हुआ है, जिसके फलस्वरूप आज मोबाइल में इंटरनेट के जरिए विश्व हमारे मुठ्ठी में समाहित है, विश्व के सभी सूचना आज इंटरनेट के जरिए मोबाइल में समाहित है। मोबाइल में इंटरनेट के सुविधा हो रहा है। इंटरनेट में मोबाइल के लिए कई सारे संगीत सम्बंधित apps है, जैसे कि तानपुरा, लहरा, तबला आदि। तानपुरा मोबाइल में होने के कारण आज हम कहीं भी जाकर स्वर की साधना कर सकते है। मोबाइल में इंटरनेट के जरिए आज हम विश्व के विभिन्न प्रकार के संगीत देख सकता हूँ और सुन सकता हूँ। जो लोग संगीत के ऊपर शोध कर रहा हैं उन्हें इंटरनेट रहने वाले मोबाइल फोन काफी सहायता करता है। जैसे की मोबाइल के जरिए विश्व के विभिन्न प्रकार के सूचना मिलता है, विश्व के अलग अलग लोगो से सम्पर्क किया जा सकता है आदि विभिन्न प्रकार की सुविधा मिलती है।

संगीत से संबंधित कुछ मोबाइल apps का नाम है swar meter, swar saptak free, tanpura droid, male tanpura droid 2, female tanpura droid 2, rhythm with tabla & tanpura, shruti box, आदि apps संगीत की साधना करने में सहायता करते हैं।

इंटरनेट के जरिए संगीत शिक्षा प्राप्त करने वाले कुछ वेबसाइट हैं :

www.shankarmahadevanacademy.com
http://indianmusiclessons.com

http://musicclassonline.in आदि।

आधुनिक काल में संगीत शिक्षण संस्थानों,अकादमियों, शैक्षिक संस्थानों में विषय के रूप में संगीत शिक्षण की व्यवस्था हो गयी तथा विश्वविद्यालय स्तर पर, स्नातक, स्नातकोत्तर, एम. फिल, पीएच .डी आदि के रूप में एक उच्च स्थानों पर पहुँच गयी। विश्वविद्यालयों में संगीत की उच्च स्तरीय शिक्षा देने के लिए संचार प्रौद्योगिकी का विभिन्न रूपों में उपयोग किया जा रहा है। पुस्तकालयों को के माध्यम से जोड़ा गया है, आडियो वीडियो लाइब्रेरियों का आरम्भ किया गया तथा संगीत संयोजन संगीत निर्दशन आदि की शिक्षा में इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर व सूचना तकनीकी का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। विश्वविद्यालय में ई- लाइब्रेरी होने के कारण आज संगीत के शोधकर्ता को काफी सहायता मिलरहा है, ई-लाइब्रेरी के जरिए हम विश्वविद्यालय से दूर में रहकर भी विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी व्यवहार कर सकते हैं।

इस तरह इंटरनेट के जरिए संगीत शिक्षा लाभ करने में कापफी सहायता मिलता है। संगीत सम्पूर्ण मानव शरीर मस्तिक, वृत्तियों आदि को शिक्षित और अनुशासित करता है। संगीत एक शिक्षा पद्धति है, जिससे ज्ञान और अनुभव मिलता है,हमारे चेतना शक्ति उद्दीपित होती है। संगीत अत्यन्त सूक्ष्म भावों की प्रेषण कला है, जिसे शिष्य को गुरु के सामने बैठकर सीखना होता है। इसमें दिनों की सहभागिता अनिवार्य रहती है। इसमें गुरु, शिष्य को उसकी बौद्धिक क्षमता व ग्रहणशीलता के आधार पर तालीम देता है। आज इंटरनेट के जरिए अलग अलग जगह पर रह कर भी प्रत्यक्ष रूप से संगीत शिक्षा ग्रहण करा सकते है, लेकिन इस तरह की शिक्षा में भी समस्या आति है, जैसे की जिस समय आप इंटरनेट के जरिए प्रत्यक्ष रूप से संगीत शिक्षा ग्रहण कर रहे उस के बीच अगर इंटरनेट का समस्या हुआ तो उस समय प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा ग्रहण करने में समस्या होगी।

अत: हम यह कह सकते हैं कि आज इंटरनेट के जरिए संगीत शिक्षा ग्रहण करने में काफी सहायता मिल रहा है और लोग इस में सफल भी हो रहे हैं, आज इंटरनेट संगीत जगत का एक महत्त्वपूर्ण स्थान को चुना है, लेकिन यह भी सच है की जो गुरु के पास जाकर प्रत्यक्ष रूप में गुरु से शिक्षा लेता है वह शिक्षा इंटरनेट के जरिए प्राप्त किया गया संगीत की शिक्षा से जयदा फलदायक है, इसलिए हमें गुरु के पास जाकर प्रत्यक्ष रूप से संगीत की शिक्षा ग्रहण करना साहिए और साथ में इंटरनेट का भी व्यवहार करना साहिए।

पाद-टिप्पणियाँ

1. https://hmakwanasite.wordpress.com/2014/09/28/6 शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा (Accessed on 30-11-16)
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/अंतरजाल (Accessed on 25-11-16)
3. http://top.howfn.com/2015/08/internet-kya-hai-duniya.html (Accessed on 21/11/16)
4. श्रीवास्तव, आचार्य गिरीश चन्द्र, ताल परिचय, भाग तीन, रूबी प्रकाशन, इलाहाबाद, 1999, पृ. 151
5. वर्मा, अमित कुमार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं शास्त्रीय संगीत शिक्षा, कला-कुंज भारती, पृ. 27
6. वर्मा, अर्चना, इंटरनेट के माध्यम से तबला-शिक्षण की संभावनाएँ, प्रथम अध्याय, पृ. 5